

पद १४६

(पंचरत्नरागमाला - तालः खयाल)

(बिहाग) अवघा मीच रे आत्मा । (मालकंस) सृष्टिस्थिति लय
कारण । अनंत विश्वरूप धृत पंचभूत गुण साम्य ही माया ॥ध्रु. ॥

(वसंत) जीव शिवबंधन अवस्था । स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण
पंचकोश । (मालकंस) सकल चराचर दृश्यपूर्ण परब्रह्म
सनातन ॥१॥ (परज) गणेश शारदा सूर्य सदाशिव विरंची मुनि
गंधर्व सिद्धगण । (सोहनी) ज्ञानरूप मार्तांड गुरु मार्तांड अवधूत
स्वरूप चैतन्य सनातन ॥२॥